जून 2018

वर्ष : 1 अंक :9

सिफरी मासिक समाचार

नील क्रांति की ओर अग्रसर

निदेशक की कलम से

हिंदी भाषा में प्रकाशित संस्थान की मासिक पत्रिका "सिफरी मासिक समाचार" का नवम अंक प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। संस्थान की जून मास की उपलब्धिओं को इस अंक में समावेश किया गया है। जून मास में संस्थान ने 22 -24 जून तक ओड़िशा की राजधानी भुवनेश्वर में भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद् की क्षेत्रीय समिति II की बैठक का आयोजन किया। डॉ त्रिलोचन महापात्र, सचिव, कृषि शिक्षा एवं अनुसन्धान विभाग, भारत सरकार एवं महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद् ने इस बैठक का उद्घाटन किया। इसी बैठक में संस्थान की दो वैज्ञानिक उपलब्धिया यथा तिलापिआ लेक वायरस किट एवं ओडिशा के जलाशय का डेटाबेस का विमोचन डॉ. त्रिलोचन महापात्र जी के द्वारा किया गया।

संस्थान के द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस एवं विश्व योग दिवस का आयोजन क्रमशः 5 जून एवं 21 जून को किया गया, जिसमे संस्थान के सभी अधिकारी एवं कर्मचारीगण ने भाग लिया। संस्थान के वैज्ञानिको द्वारा विभिन्न राज्यों में अवस्थित खुले जल संसाधनों में मात्स्यिकी एवं सम्बंधित विषयो पर मानसून के पहले का शोध सर्वेक्षण कार्य पूर्ण किया गया। संस्थान के दो वैज्ञानिको श्री डी. करुणाकरण एवं श्री राजेंद्र नायक का स्थानांतरण भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद् के पोर्टब्लेयर एवं कोच्चि स्थित संस्थानों में परिषद् द्वारा किया गया। दोनों वैज्ञानिको को संसथान की ओर से हार्दिक शुभकामनाये। संस्थान ने मत्स्य कृषको के लिए विभिन्न आयोजन यथा प्रशिक्षण एवं प्रसार कार्यकर्मो का भी आयोजन किया गया। आपके सुझावों का इन्तजार रहेगा।

धन्यवाद

मुख्य शोध उपलब्धियां

मानसून पूर्व चार महत्वपूर्ण नदियों, ताप्ती, चलीयार, सियांग और गोदावरी का सर्वेक्षण किया गया। इस सर्वेक्षण में यह पाया गया कि ताप्ती नदी के बुरहानपुर क्षेत्र में नाइट्रोजन, फॉस्फोरस और क्लोरोफिल आदि का स्तर अधिक पाया गया है।

साइप्रिनिडे और शिलबीडे समूह की 12 वंश के कुल 17 फिन मछली प्रजातियां को अरूणाचल प्रदेश के सियांग नदी के 6 सैम्पलिंग स्टेशनों, पुगिंग, यिंगिकोंग, बोलेंग, कोमसिंग, पासीघाट और ओरामघाट से दर्ज किया गया है।

गोदावरी नदी के नासिक से नान्देद क्षेत्र (विस्तार 1465 कि.मी.) में जल की तीव्र कमी देखी गई है। इस नदी में घरेलु अशोधित जल के प्रवाहित होने के कारण ऑक्सीजन की स्तर (0.95 पीपीएम.) घट गया है जबकि बीओडी 32 पीपीएम, सीओडी 160 पीपीएम तथा विशिष्ट चालकता 700 माइक्रो सेमेन्स/ सेमी पाया गया। लेकिन श्रीराम सागर जलाशय के जल प्रवाह के कारण इस नदी के जल की गुणवत्ता में वृद्धि देखी गई है।

पलयार जलाशय के पारिस्थितिकी एवं मत्स्य वास प्राचलों तथा इक्थियोफौना के जमाव का अध्ययन किया गया। *कतला कतला*, *लेबियो रोहिता* और *सिरिहिन्स मृगला* के अलावा इस जलाशय में कुल 24 प्रजातियों की उपस्थिति को देखा गया है। इस जलाशय में मीठाजल झींगा प्रजाति भी पाये जाते हैं।

तिलपिया लेक वायरस (टीएलवी) को जांचने के लिये पहचान किट तथा जलाशयी आंकड़ों के डेटाबेस को भुवनेश्वर में 22 जून 2018 को सचिव कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग द्वारा विमोचित किया गया।

मई 2018 के दौरान गंगा नदी के इलाहाबाद छेत्र से मत्स्य प्रग्रहण का अनुमान 15.13 टन था, जबकि अप्रैल 2018 के दौरान यह 11.9 4 टन था। अन्य समूह

का योगदान अधिकतम (40.91%) था और विदेशी मछलियों (39.11%) से थोड़ा अधिक था जबकि आईएमसी प्रजातियों का योगदान कम से कम केवल 5.1% था। विदेशी मछलियों में तिलपिया मछली अधिक संख्या में पायी गयी। पिछले महीने की तुलना में कुल प्रग्रहण में 26.72% की वृद्धि हुई है। मई 2018 के महीने के दौरान गंगा नदी के इलाहाबाद लैंडिंग साइट से आईएमसी प्रजातियों की अनुमानित लैंडिंग का 0.772 टन रहा है। कतला कतला (39.12%) लैबियो रोहिता (29 .6%) सिरिहिन्स मृगला (23.32%) और लैबियो कैलबासु (7.9%) पायी गयी।

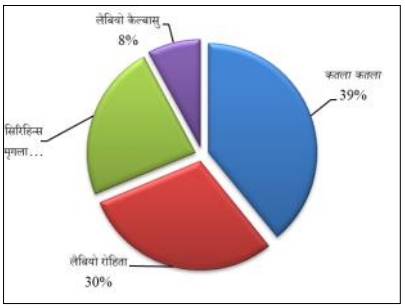

24वीं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के क्षेत्रीय समिति - II बैठक का उद्घाटन

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (भाकृअनुप) की क्षेत्रीय समिति II की 24वीं बैठक, जिसमें पश्चिम बंगाल, ओडिशा, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और अंडमान और निकोबार द्वीप समूह राज्यों के सदस्य शामिल हैं का दिनांक 22 जून 2018 एम एस स्वामीनाथन हॉल, ओयूएटी, भुवनेश्वर में उद्घाटन किया गया । 22 से 23 जून के दौरान भुवनेश्वर के कृषि विस्तार के प्रबंधन संस्थान(आईएमएजीई) में तकनीकी सत्र आयोजित किए गये। यह आयोजन भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर द्वारा भाकृअनुप-केन्द्रीय मीठाजल जीव पालन संस्थान, भुवनेश्वर के सहयोग से आयोजित किया गया।

भाकृअनुप ने देश भर में कृषि-जलवायु क्षेत्रों के आधार पर आठ क्षेत्रीय समितियां स्थापित की हैं। इन क्षेत्रीय समितियों को, हितधारकों के क्षेत्र के लिए कृषि, पशुपालन और मत्स्य पालन में अनुसंधान और विस्तार में आने वाले वर्षों में एजेंडा का निर्णय करने प्राथमिक अनुसंधान और प्रशिक्षण प्रयासों में प्रमुख

अंतर की गहराई से जांच और प्राथमिकता की पहचान करने के लिए एक मंच प्रदान करने के लिए स्थापित किया गया है। ।

डॉ. टी. महापात्र, सचिव, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग और महानिदेशक, भाकृअनुप, नई दिल्ली, ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में जोर दिया कि यह क्षेत्र कृषि, पशुपालन, मत्स्यपालन, बागवानी, सिरीकल्चर और अन्य बहुआयामी विकास के लिए जबरदस्त अवसर प्रदान करता है। यह क्षेत्र भारत की खाद्य टोकरी के रूप में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। इस क्षेत्र के राज्य चावल, आलू, तंबाकू, जूट, कुक्कुट पालन, मत्स्य, तिलहन, सब्जियां और फूलों के प्रमुख उत्पादक हैं। भारत कृषि में जलवायु परिवर्तन की समस्याओं, शहरीकरण की समस्या से हानि और कई अन्य समस्याओं के बावजूद देश 280 मिलियन मीट्रिक टन से अधिक अनाज पैदा कर रहा है। ऐसा सफल तकनीकी और नीति समर्थन के सही मिश्रण के कारण हुआ है। उन्होंने भाकृअनुप, राज्य विश्वविद्यालय और राज्य सरकारों के समेकित प्रयासों के लिए आवाहनं किया कि कृषि क्षेत्र से किसानों की आमदनी को वास्तविकता में परिवर्तित करके दोगुनी करना सुनिश्चित किया जा सके।

डॉ जे के जेना, उप महानिदेशक, (मत्स्य विज्ञान और पशु विज्ञान) ने क्षेत्रीय समिति बैठक द्वितीय की पृष्ठभूमि प्रस्तुत की और इस क्षेत्र में कृषि अनुसंधान और विकास की प्रमुख उपलब्धियों पर प्रकाश डाला।

इससे पहले डॉ बसन्त कुमार दास, निदेशक, भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय

मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान और आरसीएम II के सदस्य सचिव ने प्रतिनिधियों का स्वागत किया। श्री छबिलेन्द्र राउल, विशेष सचिव (कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग) और सचिव (भाकृअनुप) ने उत्पादन प्रणाली में

प्रतिमान बदलाव की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने उपभोक्ता प्रणाली और उत्पादन प्रणाली के बीच संरचनात्मक असंतोष को पाट दिये जाने की आवश्यकता पर बल दिया । किसानों को अपनी आय बढ़ाने और उन्हें संकट से बाहर उठाने के लिए बाजार के उत्पादन के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

श्री बिंबधर प्रधान, अतिरिक्त सचिव (मत्स्य विज्ञान विज्ञान और पशु विज्ञान) और वित्तीय सलाहकार (भाकृअनुप) ने ई-नाम के साथ किसानों को जोड़ने पर बल दिया। उन्होंने जलवायु परिवर्तन की समस्याओं से निपटने के लिए राज्य विशिष्ट हस्तक्षेपों की भी वकालत की। ओडिशा सरकार के कृषि और कृषक सशक्तिकरण के प्रधान सचिव, डॉ. एस गर्ग ने भाकृअनुप द्वारा आयोजित कृषि

अनुसंधान और विकास पर विभिन्न हितधारकों के साथ घनिष्ठ बातचीत की सराहना की और कहा कि यह सुनिश्चित करने में एक लंबा रास्ता तय होगा कि शोध निष्कर्ष कृषि समुदाय के लाभ के लिए अच्छी तरह से तैयार हैं।

श्री जी बी ढल, कृषि उत्पादन आयुक्त, ओडिशा ने कृषि में रोबोटिक्स, जीनोमिक्स और नैनो टेक्नोलॉजी के उपयोग पर प्रकाश डाला। उन्होंने टिप्पणी की कि इज़राइल और अमेरिका जैसे देश 4 जी कृषि प्रौद्योगिकियों का उपयोग कर रहे हैं, जहां हम भारत में 2 जी स्तर पर हैं। उन्होंने किसानों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति के सुधार के लिए नई पीढ़ी की कृषि प्रौद्योगिकियों को उपलब्ध कराने के लिए वैज्ञानिको से आग्रह किया।

इस अवसर पर भाकृअनुप के वरिष्ठ अधिकारी; भाकृअनुप अनुसंधान संस्थानों के निदेशक, राज्य कृषि विश्वविद्यालयों के कुलपति, राज्यों के कृषि विभाग, पशुपालन, डेयरी और मत्स्यपालन विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों (प्रधान सचिव / सचिव / निदेशक) ने भाग लिया । सभी अधिकारिओ ने कृषि सहित कृषि डेयरी, मत्स्य पालन, प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन और मानव संसाधन विकासके विकास के लिए रोडमैप तैयार करने के लिए चर्चा में भाग लिया । भाकृअनुप-केन्द्रीय मीठाजल जीव पालन संस्थान के निदेशक डॉ एस एस मिश्रा ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

मछली प्रग्रहण के डेटा संग्रहण के लिए इलेक्ट्रॉनिक डेटा अधिग्रहण प्रणाली (ई-डीएएस) पर मध्य प्रदेश के जलाशयों पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

भारत में 3.5 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्र के विशाल जलाशय संसाधन हैं जो मछली उत्पादन और आजीविका का एक महत्वपूर्ण स्रोत हैं। मत्स्य पालन संसाधनों के मत्स्य उत्पादन में वृद्धि और टिकाऊ प्रग्रहण के विकास एवं प्रबंधन के रणनीतियों के लिए मत्स्य उत्पादन, प्रजातियों की संरचना, मत्स्य विविधता,

मछली पकड़ने के प्रयास आदि डेटा की आवश्यकता होती है। हालांकि, जलाशयों से मत्स्य संग्रह एक चुनौतीपूर्ण कार्य है क्योंकि ये जल निकाय भौगोलिक दृष्टि से व्यापक एवं असंख्य हैं। जलाशयों में डेटा अधिग्रहण की समस्यायों को दूर करने के लिए संस्थान ने इलेक्ट्रॉनिक डेटा अधिग्रहण प्रणाली (ई-डीएएस) विकसित की है ताकि जलाशयों (मोबाइल फोन से एसएमएस के माध्यम से) से मत्स्य पकड़ने के डेटा को सीधे संगणक के डेटाबेस में कैप्चर किया जा सके अब तक भारत के तीन राज्यों (कर्नाटक, तमिलनाडु और झारखंड) के चयनित जलाशयों में परीक्षण कार्यान्वयन सफलतापूर्वक रहा है।

मध्य प्रदेश भारत का एक प्रमुख राज्य है जो 1.87 लाख हेक्टेयर के विशाल जलाशय संसाधनों के साथ संपन्न है तथा जिनमें से अधिकांश बड़े जलाशयों के अंतर्गत आते है। 18 जून, 2018 को भोपाल में मध्य प्रदेश मत्स्यपालन संघ के सहयोग से भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर द्वारा ईडीएएस पर एक प्रदर्शन सह प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में एम.एस. ढाकाड, भारतीय वन सेवा, प्रबंध निदेशक, मध्य प्रदेश मत्स्य पालन संघ ने उद्घाटन किया । इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में श्री आर के चौधरी, क्षेत्रीय प्रबंधक, मधय प्रदेश मत्स्य पालन संघ और फेडरेशन के वरिष्ठ अधिकारी सहित 10 मछुआरों ने भाग लिया । राज्य के चयनित जलाशयों में ईडीएएस के कार्यान्वयन की पद्धतियों पर संघ के अधिकारियों के साथ संस्थान के वैज्ञानिकों की बातचीत हुई ।

"सीआईएफआरआई-टीएलवी पीसीआर किट" का विमोचन

डॉ. टी. महापात्रा, सचिव, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग और महानिदेशक, भाकृअनुप ने 22 जून, 2018 को भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर द्वारा विकसित तिलपिया में तिलपिया लेग वायरस का पता लगाने के लिए पीसीआर किट" एवं "सीआईएफआरआई-टीएलवी एक कदम" का विमोचन उड़ीसा कृषि और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर में आयोजित क्षेत्रीय समिति II की बैठक में

किया।। श्री सी राउल, विशेष सचिव, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग और सचिव, भाकृअनुप, श्री बी प्रधान, अतिरिक्त सचिव, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग और वित्तीय सलाहकार, भाकृअनुप; डॉ. जे के जेना, उप महानिदेशक (मत्स्य विज्ञान विज्ञान), भाकृअनुप और डॉ बसन्त कुमार दास, निदेशक, भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर, कोलकाता इस अवसर पर उपस्थित थे ।

चौथे अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस आयोजन

भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने 21 जून, 2018 को चौथा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन किया। योग

सत्र का आयोजन प्रसिद्ध योग विशेषज्ञ श्री सुजीत घोरी और योग केंद्र, बैरकपुर के मार्गदर्शन में किया गया। 21 जून, 2018 की सुबह संस्थान की

लॉबी में 150 संस्थान कर्मचारियों और उनके परिवार के सदस्यों ने कार्यक्रम में भाग लिया एवं भारत सरकार, आयुष मंत्रालय द्वारा प्रचारित आम योग प्रोटोकॉल के साथ योगाभ्यास किया। इससे पहले, 20 जून, 2018 को संस्थान के सदस्यों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य लाभों के लिए "योग के स्वास्थ्य लाभ" पर एक व्याख्यान भी आयोजित किया गया था। भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र गुवाहाटी, बैंगलोर और वडोदरा ने भी इस अवसर पर योग दिवस मनाया।

'किसान की बात प्रधान मंत्री के साथ' कार्यक्रम का सीधा प्रसारण

दिनांक 20 जून, 2018 संस्थान के स्टाफ सदस्य ने पूर्वी चंपारण (बिहार) जिले के मत्स्य किसान के साथ, डी. डी. किसान द्वारा प्रसारित माननीय प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी जी के कार्यक्रम "किसान के बात प्रधान मंत्री के साथ" संस्थान के सभागार में अवलोकन किया गया।

बैठक

भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक ने भाकृअनुप-केन्द्रीय मीठाजलजीव पालन संस्थान के क्षेत्रीय केन्द्र, आनंद, गुजरात द्वारा दिनांक 24 मई 2018 को राजपिपला, गुजरात में ग्रामीण पोखर में कार्प प्रजाति के जीवपालन पर आयोजित कार्यशाला में भाग लिया।

भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिकों ने मानसून पूर्व दिनांक 30 मई से 7 जून तक गुजरात राज्य के सरदार सरोवर जलाशय के छः सैम्पलिंग स्थलों तथा नर्मदा ज्वारनदमुख के 10 स्थानों का सर्वेक्षण किया।

संस्थान ने दिनांक 4 जून, 2018 को नई दिल्ली में भारत और बंगलादेश के मध्य आयोजित ज्वाइंट वर्किंग ग्रुप की बैठक में भाग लिया।

संस्थान ने दिनांक 13-14 जून, 2018 को हैदराबाद में सेन्टर फॉर इकोनॉमिक एण्ड सोशल स्टडीज में सूखी मछली विषय (ड्राई फिश मैटर्स) पर आयोजित बैठक में भाग लिया।

संस्थान ने दिनांक 14 जून, 2018 को इम्फाल में मणिपुर राजकीय मात्स्यिकी विकास तकनीकी समिति की प्रथम बैठक में भाग लिया।

संस्थान में दिनांक 5 जून, 2018 के 45वीं विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया। इस अवसर पर मैंग्रोव क्षेत्र के सुन्दरी के पौधों को गंगा नदी के किनारे पर लगाया गया। इस मुहिम का लक्ष्य स्थानीय लोगों में गंगा नदी के तट से मिट्टी के अपक्षरण को रोकने में सुन्दरी के पौधों की भूमिका के बारे में जागरूक करना था।

एनएफडीबी प्रयोजित नीली क्रांति पर सेन्ट्रल सेक्टर योजना के अंतर्गत बिहार के पूर्वी चम्पारण जिले के मोतीहारी में चार आर्द्रक्षेत्रों, मझरिया (120 हे.), करिया (120 हे.), रूलही (80 हे.) और सिरसा (70 हे.) में मात्स्यिकी संवर्द्धन और आजीविका सुधार पर प्रौद्योगिकी का प्रदर्शन किया गया, मझरिया, करिया, रूलही और सिरसा आर्द्रक्षेत्रों के 4 हे. क्षेत्र में घेरे में मत्स्य बीज उत्पादन एवं पालन हेतु पेन को लगाया गया।

प्रशिक्षण

सुन्दरवन के जनजाति मछुआरों (महिला एवं पुरूष मछुआरे) के कौशल विकास हेतु दिनांक 12 जून से 15 जून 2018 तक "सुन्दरवन के नहरों में मात्स्यिकी विकास" के विभिन्न पहलुओं पर एक प्रशिक्षण आयोजित किया गया। इसमें 24 मछुआरों ने भाग लिया।

काशी हिन्दु विश्वविद्यालय के कृषि स्नातक के छात्र/छात्राओं के लिये "अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी प्रबंधन" पर प्रशिक्षण दिनांक 10 जून से 15 जून 2018 तक आयोजित किया गया। इसमें 30 छात्र/छात्राओं को अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं पर प्रशिक्षण दिया गया।

संस्थान के क्षेत्रीय केन्द्र गुवाहाटी के वैज्ञानिकों ने दिनांक 13 जून 2018 को मात्स्यिकी विषय पर टेलिफोन द्वारा दूरदर्शन, गुवाहाटी के कृषि दर्शन कार्यक्रम के सीधे प्रसारण में भाग लिया।

बिहार के चम्पारण जिले में "आर्द्रभूमि मात्स्यिकी विकास" के अंतर्गत पांच दिवसीय सर्वेक्षण-सह- प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन दिनांक 18 जून से 22 जून 2018 तक किया गया। इसमें करिया और रूलही मान के 28 मछुआरों को आर्द्रभूमि मात्स्यिकी विकास के विभिन्न पहलुओं पर प्रशिक्षण दिया गया।

दिनांक 21 जून 2018 को जनजाति उपयोजना के अंतर्गत असम के बरझोरा, गोआलपाड़ा में अजगर सोशल सर्किल, अगिया, गोआलपाड़ा तथा बरजोंग बील मात्स्यिकी समिति, बरझोरा के सहयोग से एक प्रदर्शन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें 90 जनजाति मछुआरों ने भाग लिया।

स्थानांतरण

दिनांक 29 जून को श्री डी करुनाकरण, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं श्री आर नायक, वैज्ञानिक को उनके स्थानान्तरण के अवसर पर सिफरी मनोरंजन क्लब की तरफ से विदाई दी गयी। इस माह संस्थान से श्री डी करुनाकरन, वरिष्ठ वैज्ञानिक का स्थानान्तरण संस्थान से भाकृअनुप-केंद्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान पोर्ट ब्लेयर एवं श्री आर नायक, वैज्ञानिक का स्थानान्तरण भाकृअनुप-केन्द्रीय मात्स्यिकी प्रोद्योगिकी संस्थान को हुआ।

सम्पादक मंडल की तरफ से

बड़े हर्ष के साथ इस अंक को आप सभी पाठको के लिए प्रस्तुत कर रहे है। श्री डी करुनाकरण, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं श्री आर नायक, वैज्ञानिक को हमारी तरफ से नये संस्थान के लिए शुभकामनाये। हमारा हमेशा ही यह उद्देश्य रहता है कि आप सभी को इस पत्रिका के द्वारा संस्थान की गतिविधियों के बारे में नयी नयी जानकारियाँ समय पर मिलती रहे।

प्रकाशन मंडल

प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक, संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मौर्य, गणेश चंद्र

संकलन एवं सम्पादन सहायता: मो. कसिम एवं सुनीता प्रसाद, फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, (आईएसओ 9001: 2008 प्रमाणित संगठन) बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120 भारत दूरभाष: 91-33-25921190/91 फैक्स: 913325920388 ई- मेल : director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट : www.cifri.res.in

ISSN 0970-616X

सिफरी मसिक समचर में निहित सामग्री प्रकाशक की अनुमति के बिना किसी भी रूप में पुन: उत्पन्न नहीं की जा सकती है